1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 44, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 सितम्बर, 2021 से रविवार 26 सितम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित आर्यसमाज दीवान हॉल चांदनी चौक में दिल्ली आर्य संगठनों की बैठक सम्पन्न

आर्यसमाज दीवान हॉल को पुनः प्राचीन गौरव एवं भव्यता लौटाने की आवश्यकता

लाला दीवानचन्द जी की पुण्यस्मृति - आर्यसमाज दीवान हॉल बनेगा गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र - धर्मपाल आर्य

दिल्ली सभा द्वारा गठित तदर्थ समिति के प्रधान श्री उत्तम कुमार आर्य जी के नेतृत्व में निरन्तर बढ़ रहा है प्रचार कार्य

आर्यसमाज दीवान हॉल की शाखा आर्यसमाज मोर सराय एवं सम्बन्धित संस्थाओं के लिए की जा रही हैं व्यवस्थाएं

देशभर से पधारने वाले विद्वानों और प्रचारकों के ठहरने के लिए बेहतर बनाई जाएंगी व्यवस्थाएं

आप सबके दिए सहयोग से ऐतिहासक आर्यसमाज को दर्शनीय बनाने का कार्य होगा : जर्जर हिस्सों की रिपेयर का काम होगा शीघ्र शुरू

पुनरुद्धार कार्यों में धन सहयोग/दान देने वाले आर्य महानुभावों के नाम किए जाएंगे अंकित - सर्वसम्मति से हुआ प्रस्ताव पारित

आर्यसमाज दीवान हॉल के कार्य में लगे सभी कार्यकर्ताओं एवं आर्य वीरों का किया गया आभार

19 सितंबर 2021 दीवान हाल आर्य समाज चांदनी चौक। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 19 सितंबर 2021 को आर्य समाज दीवान हॉल के प्रांगण में एक विशेष गोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी,

आर्यसमाज दीवान हॉल चांदनी चौक में आयोजित दिल्ली के प्रमुख आर्य संगठनों की बैठक में पधारे पदाधिकारीगण

कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री शिवकुमार मदान जी, मंत्री श्री वीरेंद्र सरदाना, श्री सुखवीर आर्य जी, श्री सुरेंद्र आर्य जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से उपप्रधान श्रीमति उषा किरण आर्या जी, महामंत्री श्री सतीश चड्डा जी, मंत्री एवं टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अजय सहगल जी, आर्य अनाथालय की ओर से श्री नितिञ्जय चौधरी जी, श्री हरिओम बंसल जी, श्री राजीव चौधरी जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा जी, दिल्ली के समस्त वेद प्रचार मंडलों के अधिकारीगण, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की ओर से श्री योगेश आर्य जी, प्रांतीय आर्य महिला सभा की ओर से प्रधाना श्रीमती रचना आहुजा जी, श्रीमती वीना आर्या, आर्य वीरांगना दल एवं आर्य वीर दल के अधिकारी, कार्यकर्ता इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर दीवान हाल आर्य समाज के प्रधान श्री उत्तम कुमार जी एवं मंत्री श्री विनीत बहल जी ने उपस्थित सभी अधिकारियों का अभिनंदन, स्वागत किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संवर्धक तथा आर्य समाज दीवान हाल के

आर्यसमाज दीवान हॉल की शाखा आर्यसमाज मोर सराय में भी पुनः आरम्भ हो गए हैं दैनिक एवं साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग एवं आर्यवीर की शाखा के आयोजन। बैठक के बीच ही सायंकालीन शाखा को देखने पहुंचे आर्यजन

धर्माचार्य श्री विद्युत शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से कार्यक्रम का सुभारम्भ हुआ, जिसमें सभी अधिकारियों ने आहुति दी। इस अवसर

आर्यसमाज दीवान हॉल में तदर्थ समिति के निर्देशन में प्रतिदिन हो रहे हैं प्रातःकालीन एवं सायंकालीन संध्या, हवन, यज्ञ,भजन, सत्संग के कार्यक्रम

पर संपूर्ण विश्व के लिए उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख समृद्धि की मंगल कामनाएं की गई। यज्ञ के उपरांत विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संचालन आर्य समाज के मंत्री श्री विनीत बहल जी एवं दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सुचारू रूप से किया।

महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज दीवान हाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करते हुए कहा कि भारत की राजधानी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो में आर्य समाज दीवान हाल चांदनी चौक का अपना विशेष स्थान है। यह समाज लगभग 100 वर्ष पुरानी और विश्वविख्यात आर्य समाज है। भारत के ऐतिहासिक स्थल लाल किले के सामने, चांदनी चौक जैसे विश्व प्रसिद्ध बाजार में इस आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास अद्भुत प्रेरणाप्रद है। यहां से लगातार आर्य समाज के प्रचार प्रसार और विस्तार को लम्बे समय तक गति प्राप्त होती रही। यहां पर आर्य समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने पुरोहित तथा उपदेशक के पदों पर रहते हुए अपनी अनुपम सेवाएं प्रदान की हैं। इस ऐतिहासिक आर्य समाज के प्रांगण में सार्वदेशिक सभा के अंतर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रमुख कार्यालय भी संचालित होते थे। दिल्ली रेलवे स्टेशन और अंतर्राज्यीय बस अड्डा नजदीक होने के कारण भारत के कोने-कोने से दिल्ली आने वाले आर्य समाज के नेता, कार्यकर्ता, सदस्यगण भी आर्य समाज दीवान हाल में ही निवास करते थे। इस तरह इस समाज में दिन-रात रौनक रहा करती थी और यहां से पूरे भारत में आर्य समाज के वैदिक विचारों का आदान-प्रदान सम्भव होता था। हमें पुनः आर्य समाज दीवान हाल को भव्य और विशाल बनाना है।

- शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज मन्दिरों एवं आर्य संस्थाओं के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने जारी किए दिशा निर्देश : कार्यकारिणी बैठक में लिया निर्णय

सरकार द्वारा जारी कोविड नियमों का पालन करते हुए सभी आर्यसमाजें 1 अक्तूबर, 2021 से नियमित करें दैनिक, साप्ताहिक यज्ञ-भजन-सत्संग तथा वेद प्रचार कार्यक्रमों के आयोजन

जारी किए गए दिशा-निर्देश एवं परिपत्र पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

किस पाप से तेरे दर्शन नहीं होते

वेद-स्वाध्याय

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षुः उपो एमि चिकितुषो वि पृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुः अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते।। - ऋ. 7/86/3
ऋषिः **वसिष्ठः**।। देवता-**वरुणः**।। छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **वरुण**=हे पापनिवारक देव! **तत् एनः पृच्छे** = मैं उस पाप को तुझसे पूछता हूँ (जिसके कारण मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं हो पाता) **दिदृक्षुः** = मैं तुम्हारा दर्शनाभिलाषी हूँ **वि पृच्छम्** = इस विषय में विविध प्रश्न पूछने के लिए मैं **चिकितुषः** = विद्वानों के **उपो एमि** = पास जाता हूँ, परन्तु **कवयः चित्** = वे सब ज्ञानी पुरुष भी **समानं इत् में आहुः** = मुझे एक ही उत्तर देते हैं- एक ही बात कहते हैं- कि "**अयं वरुणः ह** = निश्चय से यह वरुणदेव ही **तुभ्यं हृणीते** = तुझसे अप्रसन्न है; उसे प्रसन्न कर!"

विनय-हे प्रभो! मैं तेरे दर्शन पाने के लिए व्याकुल हूँ। तुझसे साक्षात् मिलने के लिए दिन-रात प्रतीक्षा में हूँ। इसके लिए यत्न करते हुए बहुत दिन हो गये। ऐसा एक भी साधन नहीं छोड़ा जो तुझसे मिलानेवाला प्रसिद्ध हो। कठोर-से-कठोर तप बड़े आनन्द से किये हैं। तो अब कौन-सा पाप रह गया है जिससे तुम्हारे चरणदर्शन नहीं हो पाते? हे वरुण! तुमसे ही पूछता हूँ, मुझे मालूम नहीं। मुझे मालूम होता तो मैं कब का प्रतीकार कर चुका होता। हे पाप-निवारक! तुम ही मुझ दर्शन-पिपासु को वह मेरा अपराध बतलाओ जिससे अप्रसन्न होकर तुम मुझे दर्शन नहीं देते। जिन्हें मैं मनुष्यों में ज्ञानी, भक्त, विद्वान्, महात्मा देखता हूँ उन सबके पास जाता हूँ और जाकर यही पूछता हूँ कि मुझे वरुणदेव के दर्शन क्यों नहीं होते? परन्तु वे सब क्रान्तदर्शी महात्मागण भी मुझे एकस्वर से यही बतलाते हैं कि वह वरुणदेव ही तुझसे नाराज है। वे सब सच्चे ज्ञानी मुझे यही एक उत्तर देते हैं। तो, हे देव! या तो मेरा पाप मुझे दिखला दो, अपनी अप्रसन्नता का कारण बतला दो, नहीं तो मुझे दर्शन दे दो। हे मेरे स्वामिन्! जब मुझे अपने पाप का पता ही न लगेगा तो मैं उसका प्रतीकार कैसे कर सकूँगा? मैं तुम्हें प्रसन्न करके छोड़ूँगा। अपने पापों के प्रतिविघात के लिए मैं घोर-से-घोर प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ। अपने को पूरी तरह पवित्र कर डालने के लिए आज मैं क्या नहीं कर डालूँगा! मैं अब तुझसे मिल जाने के लिए व्याकुल हो उठा हूँ। इसलिए, हे अन्तर्यामी प्रभो! मैं तुझसे अपने पापों को जानना चाहता हूँ। मेरे पापों के सिवाय इस संसार में और कोई वस्तु नहीं है जो अब मुझे तुमसे मिलने से रोक सके।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या पंजाब धर्मान्तरण का नया अड्डा बन गया है?

गुरुओं की धरती पर ये किसने किया षड़यन्त्र???

......आज पंजाब में आस्था के तस्कर कहो या ईसायत के डीलर, अपनी फ्रेंचाइजी जगह-जगह खोल रहे रहे हैं। या कहो आस्था के अधिक से अधिक तस्कर हर महीने मैदान में उतारे जा रहे हैं। इसके लिए कई ईसाई मिशनरी भगवा वस्त्र धारण करते हैं, आश्रमों में रहते हैं और मंदिर को गिरजाघर की तरह बनाते हैं। यानि मछली ऐसे नहीं तो ऐसे फंसेगी। ये पब्लिक के बीच में भ्रम तक फैला रहे हैं कि 19 वें पुराण में वेद व्यास जी लिख गये हैं कि जीसस नाम का एक भगवान सफेद कपड़ों में आएगा आदि आदि। ..... असल में इनका झूठ चल जाता है, लोग फंस भी जाते हैं। कारण भारत में दो गरीबी है। एक तो अर्थिक गरीबी यानि अभी भी जिन लोगों तक सभी सुविधाएँ पहुंचनी थी नहीं पहुंची। दूसरी सबसे बड़ी गरीबी है आध्यात्मिक गरीबी या धार्मिक गरीबी। यानि समाज के एक बड़े तबके तक धर्म ही नहीं पहुंचा उसे ना अपने ग्रन्थ का पता ना धर्म का ज्ञान इसी का फायदा ये लोग फर्जी मन्त्र बनाकर उठा रहे हैं। उन्हें बताते हैं कि जीसस आने वाले हैं और सबके दुःख समाप्त हो जायेंगे। अगर तुम किसी अन्य धर्म का पालन करोंगे तो नरक में जाओगे। मसलन दिखावटीपन और नकली चमत्कार अशिक्षित गरीब लोगों को समझाने के लिए काफी हैं।........

अभी हाल ही में कांग्रेस शासित राज्य पंजाब में अचानक मुख्यमंत्री का बदला जाना कई सवाल लेकर खड़ा हो गया है। जिसमें मुख्य रूप से नवनियुक्त मुख्यमंत्री चरनजीत सिंह के पंथ को लेकर सोशल मीडिया में सवाल भी खड़े हो रहे हैं। सवाल ये है कि पंजाब के मुख्यमंत्री सिख हैं या दलित सिख या फिर ईसाई? वैसे देखा जाये तो चरणजीत जी का चमकोर चर्च से बड़ा लगाव है। पिछले दिनों ही इनके कई पास्टर पादरियों के साथ फोटो विडियो सोशल मीडिया पर वायरल रहे थे। इसी आधार पर कई लोग इन्हें ईसाई तक बता रहे हैं। उनका दावा है कि इसी कारण देश के राजनितिक परिवार ने इन्हें ये पद दिया है।

बहराल कुछ भी हो पर ये तय है कि जिस पंजाब में सदियों पहले गुरु नानकदेव जी की शिक्षाओं से भक्ति आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा आज उस पंजाब में ईसाइयत जोर पकड़ रही है। या ये कहो कभी महाराजा रणजीत सिंह ने जिस पंजाब को स्वर्ग में बदल दिया था आज उसी पंजाब को ईसाइयत में बदला जा रहा है। अगर साल 2011 की जनगणना को देखें तो पंजाब में कुल 3,48,230 ईसाई थे। यदि ये संख्या सही है, तो पिछले वर्षों में ईसाइयों की आबादी कम से कम 10 गुना बढ़ी है। यहाँ तक कि इनके पादरी भी कह रहे हैं कि सरकारी आंकड़े भले ही कम दिखा रहे हों लेकिन हमारी संख्या अब 11 फीसदी बढ़ चुकी है। और ये दावा भी कोई आजकल का नहीं बल्कि ये दावा भी साल 2016 में एक अखबार में ईसाई मिशनरीज ने किया था।

अब सवाल ये है कि जो ये ईसाई पंजाब के अन्दर बढ़े है ये कहाँ से आये? वेटिकन सिटी के शरणार्थी है या यूरोपीय देशों से भागे ईसाई या फिर ऐसा था कि पंजाब में सदियों से ईसाई थे और ये यहाँ पैदा हुए लोग हैं? लेकिन आंकड़े और तथ्य तो ऐसा कुछ बयान नहीं करते। क्योंकि ना तो यहाँ ईसाई बाहर से आये और ना आज से तीस साल पहले यहाँ ईसाइयों की संख्या यहाँ थी तो ये लोग कहाँ से आये?

अगर ध्यान से देखे तो बताया जाता है कि साल 2008 में पास्टर अंकुर नरूला के साथ मात्र 3 लोग जुड़े थे। लेकिन अगले दस साल यानि 2018 तक, अब इनके एक लाख बीस हजार अनुयायी बताये जा रहे हैं। जिस हिसाब आज ये लोग सोशल मीडिया आदि का आज प्रयोग कर रहे हैं तो साल 2022 तक अंकुर के ही पास लगभग तीन साढ़े तीन लाख सदस्य होंगे। और पंजाब में यह केवल को एक पादरी नहीं हैं पंजाब में तो अब घर घर पादरी फ़ैल गये हैं कोई कंचन मित्तल, कोई बजिन्दर सिह, रमन सिंह जैसे हिन्दू-सिख नाम के ना जाने कितने पादरी तैयार हैं जो हर हफ्ते हजारों लोगों को परिवर्तित करते हैं।

अब दूसरा सवाल ये है कि इतनी बड़ी संख्या में ये सब क्यों हो रहा है और क्या इसका पूरा दोष मिशनरीज पर डाल देना चाहिए? शायद नहीं! असल में उनका तो ये बिजनेस बन चुका है। क्योंकि भारत में तो ये कहावत आम हो चुकी है कि कोई भी सफेद कपडे पहनकर 10 बीस गरीब लोगों को चर्च को बेच सकता है, और चर्च भी आज प्रार्थना घर ना होकर एक किस्म से लोगों का धर्म खरीदने के अड्डे बन चुके है। किस तरह हफ़िंगटन पोस्ट और ट्रिब्यून ने कवर किया और बताया कि कैसे सिख और हिदू धर्म से लोगों को पंजाब में कन्वर्ट किया जा रहा है। यानि हमें हमारा हाल जानने के लिए विदेशी मिडिया पर निर्भर होना पड़ रहा है। जबकि भारत में खुद को राष्ट्रवादी मीडिया बताने वाले चैनल ऐसी कवरेज से नदारद है जो धर्मांतरण से भी घातक है। साफ़ कहे तो ये लोग अपनी मिडिया की जिम्मेदारी से दूर भाग रहे हैं।

लेकिन अगर कोई हिन्दू बाबा, गलती से कोई अपराध कर दे तो ये पूरा दिन उस खबर को कई-कई बार चलाते हैं। इसके अलावा हिन्दू धर्म में व्याप्त किसी कुरीति या अन्धविश्वास पर बड़े-बड़े शो किये जाते हैं। लेकिन दिन दहाड़े हजारों लोगों को चंगाई सभाओं में इलाज के झूठे वादे पर ऐसी सभाओं में लाया जाता है। झाड़-फूंक हालेलुइया किया जाता है। लेकिन कमाल देखिये! इन पाखंड पर कोई मीडिया ग्रुप ना सवाल करता और ना प्रोग्राम करता। जबकि ये लोग सबसे पहले सबसे तेज खबर वाले चैनल हैं जो भूकंप के केंद्र तक पहुँचने का दावा करते हैं। ये वो पत्रकार है जो भारत पाकिस्तान के मुद्दे पर टैंक और मिसाइल पर बैठकर शो करते हैं। लेकिन चंगाई सभाओं में हर रोज सभी प्रकार की बीमारियों कैंसर, टीबी लीवर बांझपन से कोरोना तक का इलाज और धर्मांतरण यीशु के नाम पर किया जा रहा है, देश में आस्था के नाम पर अन्धविश्वास फैलाया जा रहा है पर इनके कैमरे पता नहीं कहाँ पान मसाला खाने गये हैं!

नतीजा, आज पंजाब में आस्था के तस्कर कहो या ईसायत के डीलर, अपनी फ्रेंचाइजी जगह-जगह खोल रहे रहे हैं। या कहो आस्था के अधिक से अधिक तस्कर हर महीने मैदान में उतारे जा रहे हैं। इसके लिए कई ईसाई मिशनरी भगवा वस्त्र धारण करते हैं, आश्रमों में रहते हैं और मंदिर को गिरजाघर की तरह बनाते हैं। यानि मछली ऐसे नही तो ऐसे फंसेगी। ये पब्लिक के बीच में भ्रम तक फैला रहे हैं कि 19 वें पुराण में वेद व्यास जी लिख गये हैं कि जीसस नाम का एक भगवान सफेद कपड़ों में आएगा आदि आदि।

असल में इनका झूठ चल जाता है, लोग फंस भी जाते हैं। कारण भारत में दो गरीबी है। एक तो अर्थिक गरीबी यानि अभी भी जिन लोगों तक सभी सुविधाएँ पहुंचनी थी नहीं पहुंची। दूसरी सबसे बड़ी गरीबी है आध्यात्मिक गरीबी या धार्मिक

- शेष पृष्ठ 8 पर

पितृपक्ष-श्राद्ध पर विशेष आलेख

जीवित माता-पिता की सेवा ही असली श्राद्ध

.....संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक यात्री है। इस यात्रा में न जाने हमारे अब से पहले कितने जन्म हुए हैं और आगे न जाने कितने जन्म होंगे? जहां पर हम पहले जन्मे थे वहां पर भी कोई हमारा श्राद्ध मनाता होगा। लेकिन कभी किसी के पास कोई लंच बाक्स आया है क्या? और फिर अगर कोई वर्ष में एक दिन भोजन किसी को करा भी दे और यह समझे कि हमने अपने माता-पिता या पूर्वजों को भोजन कराया है तो इसका मतलब 365 दिन में एक दिन भोजन करा दिया बाकि 364 दिन क्या वें भूखे रहेंगे? वास्तव में जीवित माता-पिता और वृद्धजनों की सेवा करना, उन्हें अपनी सेवा से सन्तुष्ट रखना ही सच्चा श्राद्ध है। .....

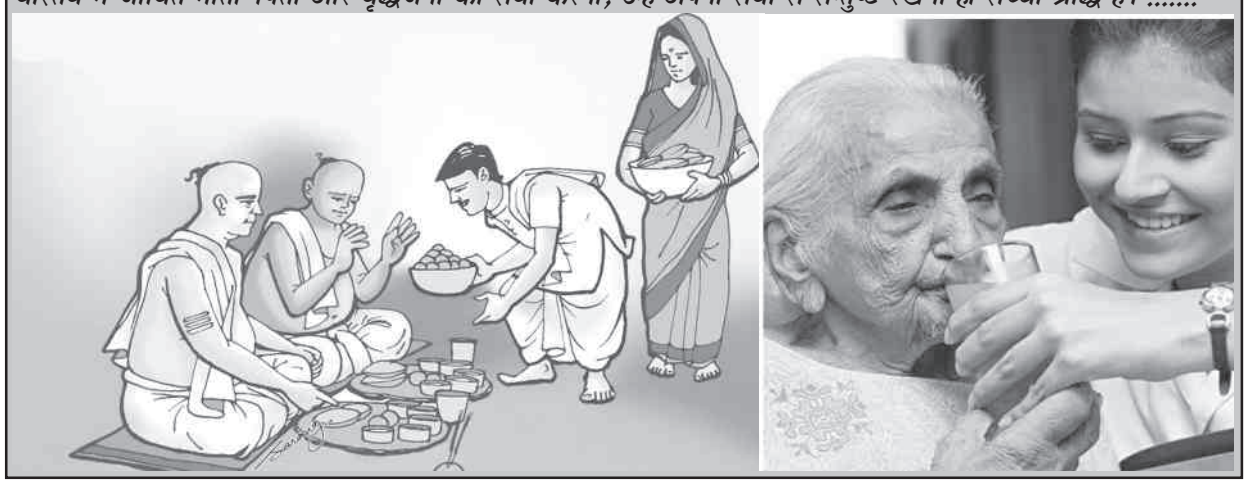

हमारी वैदिक संस्कृति संपूर्ण विश्व में आदर्श, उज्ज्वल और श्रेष्ठ संस्कृति है। वैदिक संस्कृति का सूर्य मानव मात्र को पारिवारिक, सामाजिक एवं वैश्विक दृष्टि से सेवा-साधना के लिए प्रेरित करता है। प्राचीन काल में हमारे यहां माता-पिता, आचार्य से लेकर समाज के वरिष्ठ -विशिष्ठ नागरिकों की सेवा और सम्मान करने की परंपरा रही है। इस सेवा भाव को यज्ञ के समान महत्व दिया जाता था। महाभारत काल के बाद कुछ शताब्दियों में हमारी संस्कृति पर अनेक प्रहार हुए। परिणामस्वरूप मानवीय मूल्यों के अवटूटन के साथ-साथ समाज के अभिन्न अंग माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों के सम्मान के प्रति समाज में बड़ा बदलाव आया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, भीष्म पितामह, श्रवण कुमार और नचिकेता आदि महापुरुषों के देश में जहां माता-पिता की आज्ञाओं को, उनके सेवा और सम्मान को सर्वोपरि माना जाता था। वहीं आज जीवित माता-पिता अपमान और तिरस्कार का जीवन जीने के लिए मजबूर तथा बेबस नजर आते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में, टी.वी. चैनलों पर दिल दहलाने वाली खबरें आती हैं कि अमुक स्थान पर स्वार्थवश कोई पुत्र अपने पिता को जान से मार देता है या कोई पुत्री अपनी मां को प्रताड़ित करते हुए नजर आती है। इससे बड़ी विडम्बना यह है कि जीवित माता-पिता को तो हर तरह की पीड़ा और कष्ट झेलने के लिए मजबूर किया जाता है। लेकिन जब वें नहीं रहते, उनके मर जाने के बाद वर्ष में एक बार, एक दिन उनके श्राद्ध के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन आदि कराकर यह समझा जाता है कि हमने अपने माता-पिता और पूर्वजों को भोजन कराया है। और यह कर्म भी लोग डर के मारे करते हैं। क्योंकि स्वार्थी ब्राह्मणों ने समाज में यह डर पैदा किया हुआ है कि अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको पितृदोष लग जाएगा। आपका आहित हो जाएगा, आप पाप के भागीदार होंगे। इन सब निराधार बातों को आधार बनाकर लोग अपने मृतक पितरों के लिए हर वर्ष आश्विन मास में पंद्रह दिनों तक श्राद्ध रूपी अंधविश्वास से भरे आयोजन करते हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने पंच महायज्ञों में एक पितृ यज्ञ करने का विधान हमें बताया है। जिसमें हमें अपने जीवित माता-पिता की सेवा श्रद्धापूर्वक करनी चाहिए। उनके लिए भोजन, वस्त्र, औषधि आदि का प्रबंध करना चाहिए। वह भी वर्ष में एक बार नहीं बल्कि आजीवन करना चाहिए। आर्य समाज पितृ यज्ञ को ही श्राद्ध का वैदिक स्वरूप मानता है। अपने जीवित माता-पिता, दादा-दादी और बड़े-बुजुर्गो की सेवा करके उन्हें सन्तुष्ट करने को ही अपना कर्त्तव्य मानता है। अगर गहराई से विचार किया जाए तो वास्तव में जो जीवित हैं उन्हीं की तो हम सेवा कर सकते हैं, जो नहीं रहे उनकी सेवा कैसे संभव हो सकती है? उन्हें कोई, कैसे भोजन करवा सकता है? जो ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है वह तो उसके निजी जीवन को पुष्टि देता है, सन्तुष्ट करता है और जिनके नाम पर श्राद्ध के रूप में उन्हें भोजन कराया जाता है। ब्राह्मण को क्या पता कि वे कहां पर हैं? किस योनि में हैं?क्योंकि ईश्वरीय कर्म सिद्धांत के अनुसार मृत्यु के कुछ समय पश्चात् ही आत्मा नया शरीर धारण कर लेता है। शरीर के रूप में उसे कौन सा, कैसा शरीर मिला तथा उसका आहार क्या होगा? किसी को क्या पता? लेकिन समाज में बिना सोचे-समझे बस एक परंपरा स्थापित हो गई, जिसे लोग बिना विचार ही निभाते चले जा रहे हैं।

एक बूढ़ी माता ने अपने पति का श्राद्ध करने हेतु ब्राह्मण को निमंत्रण दिया। अगले दिन जब ब्राह्मण भोजन करने के लिए आया तो भोजन बनने में थोड़ा विलंब था। उस बीच माता का बेटा पंडित जी से बात करने लगा। उसने पंडित जी से पूछा कि ब्राह्मण महाराज जो हम आपको भोजन कराएंगे क्या वह हमारे पिता के पास पहुंच जाएगा? क्या उस भोजन से उनको सन्तुष्टि मिलेगी? ब्राह्मण ने कहा हां जो आप मुझे भोजन कराएंगे आपके पिता तक पहुंच जाएगा। उस नौजवान ने पुन: प्रश्न किया कि फिर तो आप यह भी जानते होंगे कि मेरे पिता कौन-सी योनि में है, उन्हें कौन-सा शरीर मिला है? ब्राह्मण ने कहा यह तो मैं नहीं जानता। नौजवान ने पूछा जब आप यह नहीं जानते कि उन्हें कौन-सा शरीर मिला है और उनका आहार क्या है तो फिर यह भोजन उनके पास कैसे पहुंचेगा? तभी अंदर से जो माता भोजन बना रही थी वह एक इंक्जेंशन लेकर बाहर निकली और इन्जेकशन में इन्सुलिन भरते हुए बोली की पंडित जी मेरे पति शुगर के मरीज थे। इसलिए वे भोजन करने से पहले इन्सुलिन का इंजेक्शन लगवाते थे। कृपा करके आप भी पहले इन्सुलिन लें, फिर भोजन ग्रहण करें। इतना सुनते ही ब्राह्मण घबराकर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा कि ऐसे थोड़े ही होता है, ऐसा तो हमने आज तक नहीं देखा। नौजवान कहने लगा जब भोजन आप पहुंचा सकते हो तो इन्सुलिन क्यों नहीं पहुंचा सकते हो? चाहे ये बात कहने के लिए ही क्यों न हो लेकिन है तो विचारणीय।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक यात्री है। इस यात्रा में न जाने हमारे अब से पहले कितने जन्म हुए हैं और आगे न जाने कितने जन्म होंगे? जहां पर हम पहले जन्मे थे वहां पर भी कोई हमारा श्राद्ध मनाता होगा। लेकिन कभी किसी के पास कोई लंच बाक्स आया है क्या? और फिर अगर कोई वर्ष में एक दिन भोजन किसी को करा भी दे और यह समझे कि हमने अपने माता-पिता या पूर्वजों को भोजन कराया है तो इसका मतलब 365 दिन में एक दिन भोजन करा दिया बाकि 364 दिन क्या वें भूखे रहेंगे? वास्तव में जीवित माता-पिता और वृद्धजनों की सेवा करना, उन्हें अपनी सेवा से सन्तुष्ट रखना ही सच्चा श्राद्ध है।

आधुनिक परिवेश में सबसे ज्यादा अगर उपेक्षा किसी की हो रही है तो वे माता-पिता और वृद्धजन हैं। आज का युवा माता-पिता और घर के बड़े-बुजुर्गो का सम्मान करना भूलता ही जा रहा है। और यह भी नहीं समझ पा रहा है कि वर्तमान में जो मैं कर रहा हूं, कल वहीं मेरे सामने घटित होने वाला है। जैसे बीज मैं बो रहा हूं वैसे ही तो फल मुझे प्राप्त होंगे। लेकिन इससे बड़ी विडम्बना की बात यह है कि घरों में माता-पिता और वृद्धजन अपमान और तिरस्कार का जीवन जीते हुए भी अपनी व्यथा को किसी से कह नहीं सकते, अगर कोई उन्हें यह कहता भी है कि आपके बच्चे आपको परेशान करते हैं, आपकी सेवा नहीं करते, यह तो गलत बात है। तब माता-पिता कहते हैं कि ऐसी बात नहीं है। यह तो कलयुग है, यह तो समय का फेर है, आजकल सभी बच्चे ऐसे ही हैं, हमारे बच्चे तो बहुत अच्छे हैं, अगर थोडा बहुत कुछ कहते सुनते भी हैं तो कोई बात नहीं, हैं तो अपने ही, इस तरह से वह अपने मन को समझा लेते हैं। क्योंकि दूसरों के सामने अपनी बेइज्जती कराने में क्या फायदा? अपने बच्चों की बुराई करके अपनी ही पगड़ी को उछालना जैसा है। लेकिन यहां पर यह भी विचार करना चाहिए कि जैसे उन्होंने अपने माता-पिता के साथ किया होगा, वैसा ही फल उन्हें प्राप्त होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवित माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, उनकी सही आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और उनका उचित सम्मान करना चाहिए।

- आचार्य अनिल शास्त्री

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

स्वास्थ्य सन्देश

स्वस्थ आंखों के लिए आवश्यक

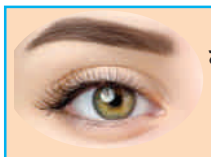

.....कहते हैं आंखें बड़ी कीमती है, हां, कीमती है लेकिन क्या नजर कीमती नहीं है? नजर एवं आंख में क्या फर्क है?नजर एवं चश्मे में क्या फर्क है? इसको जाने बगैर समाज से अंधापन दूर करना मुश्किल है। नजर एवं आंख में इतना ही फर्क है जितना शरीर एवं जीवन में।.....

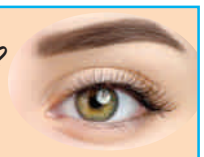

आर्यसन्देश के इस अंक में स्वास्थ्य सन्देश के स्तम्भ में आंखों का कोई उपचार नहीं बताया गया है, बल्कि आंखों के उपचार के सम्बन्ध में जो समाज में भ्रम हैं उनके रहस्यों की जानकारी दी गई है। - सम्पादक

आंखें प्रकृति की सुंदर देन है आंखों को सुंदर एवं स्वस्थ रखने के लिए नजर का रहस्य जानना जरूरी है। नेत्र संबंधित सामाजिक अज्ञानता एवं अंधविश्वास जो अंधेपन को बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं उनका जानना कितना जरूरी है? इस अविश्वसनीय सच्चाई जिससे हम अनजान हैं, उस सच्चाई को आपके सामने रखने की कोशिश की जा रही है लेकिन सदियों से चली आ रही इन स्वास्थ्य संबंधित सामाजिक अज्ञानता एवं अंधविश्वास के विरुद्ध अभियान क्रियान्वित करना क्या इतना आसान है?

कहते हैं आंखें बड़ी कीमती है, हां, कीमती है लेकिन क्या नजर कीमती नहीं है? नजर एवं आंख में क्या फर्क है?नजर एवं चश्मे में क्या फर्क है? इसको जाने बगैर समाज से अंधापन दूर करना मुश्किल है। नजर एवं आंख में इतना ही फर्क है जितना शरीर एवं जीवन में।

नजर का रहस्य - सही एवं खराब आंख का मापदंड क्या नजर है? नहीं, समाज में सही एवं खराब आंख को सिर्फ चश्मे में पहचाना जाता है। हमारे सामने अगर दो लड़कियां हैं एक ने चश्मा पहना हुआ है तो हम कहते हैं चश्मे वाली की आंख खराब है जबकि हो सकता है चश्मे वाली लड़की की दोनों आंखें सौ प्रतिशत सही है तथा जो चश्मा नहीं लगाती उसकी एक आंख खराब भी हो सकती है। नजर एवं नंबर क्या एक ही बात है? नहीं, नंबर नजर कमजोर होने का एक कारण है। यह नजर कमजोर चश्मे में से ठीक हो सकती है लेकिन नजर कमजोर के और भी बहुत कारण है। जो चश्मे से ठीक नहीं हो सकती। नजर खराब की सामाजिक परिभाषा क्या है? एक मनुष्य को अगर नजर कमजोर की तकलीफ नहीं है तो उसकी नजर सामाजिक तौर पर सही है। 80% जनता को 90 % नजर कमजोर होने पर भी नजर कमजोर की तकलीफ नहीं होती एवं वे इलाज के लिए तैयार नहीं होते, नजर कमजोर को तकलीफ शब्द में नहीं रखना अर्थात अधिकतर मरीज तकलीफ पूछने पर कहते हैं, तकलीफ कुछ भी नहीं है, बस दिखाई नहीं देता। हम सब समाज शब्द इस्तेमाल करते हैं तो उसका अर्थ जो 10 % शहर में रहने वाली पीढ़ी पढ़ी-लिखी जनता ही नहीं है 90% गांव में रहने वाली अनपढ़ जनता की नजर भी है, नजर कमजोर की तकलीफ लिखे हुए शब्दों को पढ़ने में होती होती है, मकान मनुष्य पेड़ पौधे देखने में नहीं क्योंकि हमारी 80% जनता अनपढ़ है इसलिए उन्हें 80% नजर कमजोर होने पर भी नजर कमजोर की तकलीफ नहीं होती है। 80% से 90% नजर कमजोर होने पर भी तकलीफ ना होना इस बात का कारण है कि काला मोतिया एवं आंख के परदे पर शुगर का असर है। इन दोनों बीमारियों में नजर कमजोर महसूस होने का अर्थ बीमारी ने 80% से 90% आप को नुकसान पहुंचा दिया। इन दोनों बीमारियों का इलाज नजर कमजोर महसूस होने से पहले हो जाना चाहिए।

चश्मे का रहस्य - क्या आप जानते हैं 50 साल या 70 साल की उम्र में बिना चश्मे के सुई में धागा डाल लेना या बारीक से बारीक अखबार पढ़ लेने को बहुत अच्छी आंख समझना सामाजिक अज्ञानता है। अर्थात इसका अर्थ है कि उनकी दूर की नजर कमजोर है। चश्मे के इस रहस्य का पता नहीं होने की वजह से ही एक सास जो 60 साल की उम्र में बारीक से बारीक अखबार पढ़ लेती है या अपने बच्चे एवं बहू को ताना देती है कि तुम्हें 40-45 की उम्र में भी नजदीक का बारीक काम करने में परेशानी होती है। चश्मे के इस रहस्य का पता न होने की वजह से ही समाज में इस प्रकार की अज्ञानता फैलती है की योगा या दवाई से चश्मा उतर जाता है। जैसे कोई 65 साल की उम्र में +2.5 नंबर का नजदीक का चश्मा लगाता था तो उसने योगा किया और वह अब बिना चश्मे अखबार पढ़ लेता है वह मनुष्य समाज में कहेगा कि योगा से चश्मा उतर जाता है, वास्तव में उसकी आंख में ऋणात्मक नंबर के आ जाने से उसकी दूर की नजर कमजोर हो गई तथा नजदीक का बिना चश्मे के अच्छा दिखने लगा। चश्मे के इस रहस्य का न पता होने के कारण ही कहा जाता है, हमारे खानदान में आज तक चश्मा नहीं लगा। समाज इसका अर्थ लगाते हैं कि खानदान में किसी की आंख खराब नहीं हुई जबकि सच्चाई यह है कि इस खानदान के सदस्यों को आंखों की पूरी रोशनी की जरूरत ही नहीं थी इसीलिए उन्हें नजर कमजोर की तकलीफ नहीं हुई।

मोतियाबिंद का रहस्य - एक मरीज को काला मोतिया के कारण आंखों के डॉक्टर ने तुरंत ऑपरेशन कराने की सलाह दी। घर आकर बड़ो या पड़ोसी से उसने अपनी बीमारी के बारे में वार्तालाप किया। पड़ोसी ने कहा मोतिया का ऑपरेशन तो पूरी आंख बंद होने पर या जब काम न चले तब होना चाहिए। 1 साल बाद जब वह मरीज सर्जन के पास पहुंचा तब उसकी आंख हमेशा के लिए खराब हो चुकी थी। काला मोतिया को मोतिया समझकर नजरअंदाज कर देना अंधेपन का एक महत्वपूर्ण कारण है।

मोतिया शब्द अर्थ- हिंदी में glauncoma को समाल बाई कहते हैं वहां पर मोतिया शब्द का अर्थ सफेद मोतिया कह सकते हैं, पंजाबी में ग्लूकोमा को काला मोतिया कहते हैं यहां पर मोतिया शब्द का कोई अर्थ नहीं है सिर्फ मोतिया शब्द का प्रयोग अपने आप में गलत तथा अंधेपन का बुलावा है हर एक बुजुर्ग जब नेत्र सर्जन से परामर्श करने जाता है तो उसके मन में सिर्फ एक ही डर होता है कि कहीं मोतिया तो नहीं है। एक मरीज

- शेष पृष्ठ 6 पर

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

ओ३म्

२३३६०१५०
२३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली - ११०००१

क्रमांक : 2022-22/271/दिल्ली सभा दिनांक : 20 सितम्बर, 2021

अत्यावश्यक परिपत्र सं. 8/2021-22

कोरोना महामारी में दिल्ली/भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देश (Guide Lines) दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों के अधिकारीगण कृपया ध्यान दें

माननीय महोदय

सादर नमस्ते!

आशा है प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

वैश्विक महामारी कोरोना की स्थिति को देखते हुए दिल्ली सरकार द्वारा अप्रैल, 2021 में लगाए गए लॉक डाउन एवं उसके उपरान्त अनलॉक की प्रक्रिया में एक-एक करके सभी संस्थाओं को अनलॉक किया गया है। सभी धार्मिक संस्थाओं में धार्मिक - सांस्कृतिक गतिविधियां आरंभ हो चुकी हैं। किन्तु अभी भी मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, चर्चों तथा अन्य धार्मिक स्थलों पर बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर रोक ही लगी हुई है। अभी सरकार की ओर से आधिकारिक रूप से इसे हटाया नहीं गया है, तथापि निरन्तर कम होते कोरोना के प्रभाव और सरकार द्वारा जारी सुरक्षा नियमों का पूर्णरूपेण पालन करते हुए, आर्यसमाज मदिरों तथा आर्य संस्थाओं में सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों को पुनः आरम्भ करने का निर्णय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी बैठक दिनांक 19 सितम्बर, 2021 की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज मन्दिरों एवं आर्य संस्थाओं में गतिविधियां आरम्भ करने की तिथि 1 अक्तूबर, 2021 निश्चित की गई है। अतः 1 अक्तूबर, 2021 से निम्नांकित दिशा-निर्देश आर्यसमाजों के दैनिक, साप्ताहिक यज्ञों, सत्संगों, तथा वेद प्रचार कार्यक्रमों के लिए जारी किए गए हैं -

- ★ साप्ताहिक सत्संगों का नियमित आयोजन करें। अधिकतम 100 की संख्या तक आर्यजन शारीरिक दूरी एवं अनिवार्य मास्क के साथ सम्मिलित हो सकते हैं।
- ★ स्वास्थ्य की दृष्टि से योगासन आदि की कक्षाएं मास्क एवं एक मीटर की अनिवार्य शारीरिक दूरी के साथ नियमित करें।
- ★ यज्ञशाला तथा सत्संग हॉल के बाहर हाथ धोने की सुचारू व्यवस्था हो। सभी सम्मिलित लोग स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें तथा शारीरिक दूरी बनाए रखें।
- ★ विवाह व सामाजिक कार्यक्रमों को आयोजित करने में सरकारी दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें। वर-वधु पक्ष/कार्यक्रम आयोजक, आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कुल संख्या 100 से अधिक न हों, इसका ध्यान रखें।
- ★ विवाह आदि आयोजन हेतु आवेदन पत्र में एक बिंदु लिखा जाएगा कि 'मैं कोविड-19 के बचाव के लिए सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करूंगा।'
- ★ यदि आपकी आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन अभी नहीं हुआ है तो नए निर्वाचन के लिए तैयारी आरम्भ कर दें और 30 नवम्बर, 2021 से पूर्व अवश्य करा लेवें।
- ★ सभा की ओर से निर्वाचन अधिकारी आपकी आर्यसमाज की मांग के अनुसार चुनावों हेतु भेजे जा सकते हैं।
- ★ सभा की देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियां यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवा दें।
- ★ यदि आपकी आर्यसमाज के अन्तर्गत शिक्षण संस्थान/विद्यालय चल रहा है तो उसे पुनः खोलने के सम्बन्ध में दिल्ली / भारत सरकार के दिशा-निर्देशों का पूर्णतः पालन करें।
- ★ समय-समय पर सरकार के द्वारा दिए जा रहे दिशा-निर्देशों का पालन अवश्य करें।

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान, मो. : 9810061763

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज दीवान हॉल को पुनः प्राचीन .....

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने पिछले कई महीनों से जो आर्य समाज के संवर्धक, कार्यकर्ता दीवान हाल में अपनी सेवाएं दे रहे थे उन सबका उपस्थित अधिकारियों से परिचय कराया और साथ में सभी को अपने शुभकामनाएं और आशीर्वाद देते हुए आर्य समाज की उन्नति, प्रगति और सफलता की प्रेरणा प्रदान की।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी उपस्थित जनों को आश्वस्त करते हुए अपने संदेश में कहा कि आर्य समाज एक ऐसा विशाल संगठन है जिसकी छाया में वैदिक संस्कृति, संस्कारों का प्रचार प्रसार होता रहेगा। श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज के पुनरुद्धार हेतु सभी उपस्थित महानुभावों से सहयोग करने की अपील की। आर्य समाज की भव्यता और विशालता के अनुरूप इसके पुनरुद्धार हेतु दिल्ली सभा के कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी ने माता कृष्णा ठुकराल जी की ओर से ढाई लाख रुपए की राशि प्रदान करने की घोषणा की, इसके साथ-साथ कई महानुभावों ने अपने अपने स्तर पर आर्य समाज दीवान हाल के उत्थान हेतु दान देने की घोषणा की। इसके उपरांत आर्य समाज दीवान हाल की शाखा आर्य समाज मोर सराय में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सभी अधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित थे। वहां पर आर्य वीर दल द्वारा लगातार शाखाओं का संचालन किया जा रहा है, जिसमें वहां के सैकड़ों बच्चे सम्मिलित होते हैं, उन सभी बच्चों को उपहार स्वरूप भेंट प्रदान की गई और साथ में बच्चों से कुछ प्रश्न उत्तर भी किए गए। श्री विनय आर्य जी ने बच्चों से सरल और सारगर्भित प्रश्न पूछे और बच्चों ने अपनी मधुर भाषा में उत्तर देकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। इस तरह आर्य समाज दीवान हाल में आयोजित इस गोष्ठी का सकारात्मक संदेश पूरे क्षेत्र में गया और अनेक लोग वहां प्रतिदिन यज्ञ आदि में भी सम्मिलित होते हैं। आजकल वहां दैनिक, साप्ताहिक यज्ञ, सत्संग, पर्व, त्योहारों पर विशेष आयोजन सहर्ष सम्पन्न होते हैं, सभी कार्यक्रमों में क्षेत्रीय स्त्री, पुरुष और बच्चे सम्मिलित होते हैं। गोष्ठी के समापन पर सभी महानुभावों के लिए प्रीतिभोज की सुंदर व्यवस्था थी, सभी ने भोजन ग्रहण किया और प्रेम सोहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- विनीत बहल, मन्त्री

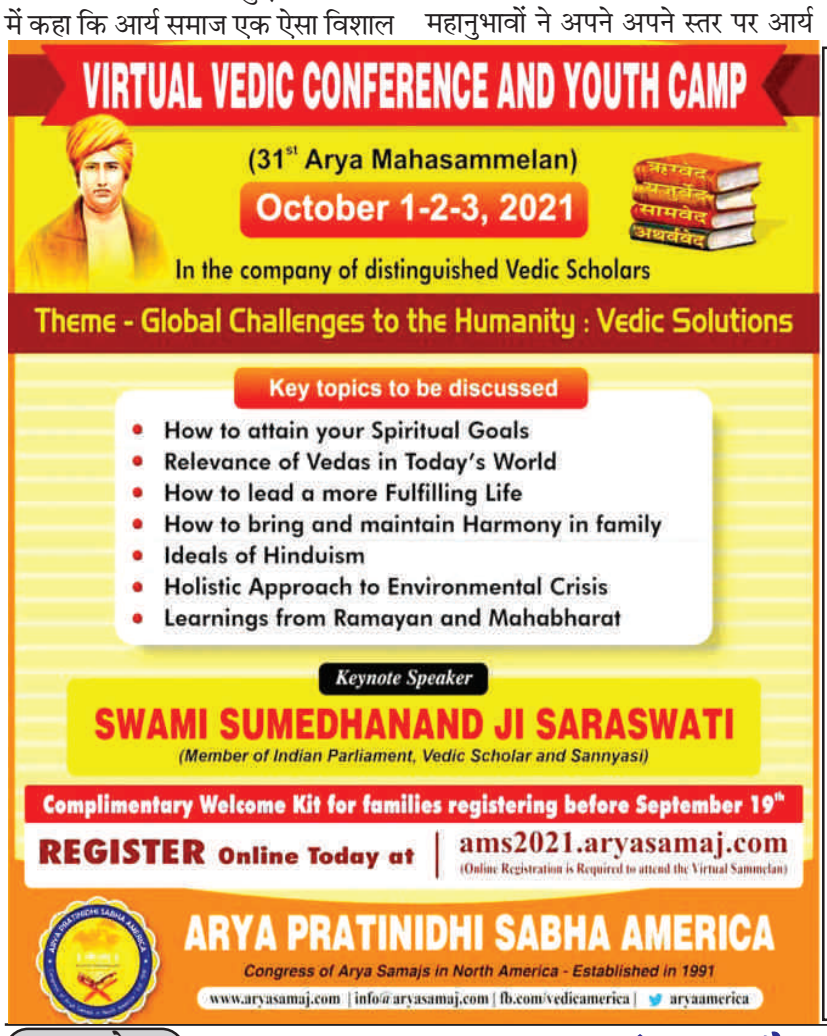

बाल बोध

संकल्प है महान शक्ति

....मनुष्य के मन के अन्दर अच्छे-बुरे विचार आते-जाते रहते हैं। जो विद्यार्थी अपने मन को अच्छे विचारों और उत्तम कार्यों के प्रति संकल्पित कर लेते हैं, उन्हें एक दिन सफलता जरूर मिलती है। लेकिन किसी क्षेत्र में सफलता के लिए केवल संकल्प करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि संकल्प को हमेशा याद रखना और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी मेहनत करना आवश्यक होता है। यहां प्रस्तुत है संकल्प से सफलता का प्रेरक प्रसंग ....- सम्पादक

दृढ़ संकल्प एक महानशक्ति है। विद्यार्थी अपने लक्ष्य के प्रति संकल्पवान होकर परिश्रम और पुरुषार्थ करे तो परिष्कार की पूर्ण संभावना होती है। मानव मन में निरन्तर संकल्प-विकल्प अर्थात् विचारों का प्रवाह गति करता है। सद्विचार मूल्यवान संपदा है। मन में विचार अच्छे भी उत्पन्न होते हैं और बुरे विचार भी उठते हैं। स्थितियां अनुकूल भी होती हैं और प्रतिकूल भी होती हैं। लेकिन जो संकल्पवान होकर, दृढ़ निश्चय के साथ कर्म करता है उसको सफलता जरूर मिलती है। इस धरा पर अनेक महापुरुष ऐसे हुए हैं जिन्होंने केवल संकल्प ही नहीं किया, बल्कि उसके कारण सफलता ने उनके चरणों को पखारा है। इसी श्रृंखला में हम एक महान संकल्पवान व्यक्तित्व को स्मरण करते हैं।

बात उस समय की है जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान एक ही परिधि के अन्तर्गत जाने जाते थे, तब भारत का बटवारा नहीं हुआ था। उस समय एक नौजवान लाहौर से चलकर नौकरी करने के उद्देश्य से दिल्ली आया। जो व्यक्ति उस युवक को अपने साथ लाया था, वह एक इंजीनियर का चपरासी था। चपरासी ने युवक को कार्यालय में बैठने को कहा और स्वयं किसी कार्य से घर चला गया। जाने से पूर्व चपरासी ने युवक को संकेत दिया कि आप बैठिए, इंजीनियर साहब अभी आने वाले हैं और मैं शीघ्र अपना कार्य करके वापिस आता हूं, तब तुम्हें साहब से मिलवा दूंगा। वह नौजवान आश्वासन पाकर निश्चिंत हो गया।

यह युवक पढ़ा-लिखा तो था, पर व्यावहारिक तौर-तरीकों से अनजान था। प्रथम बार महानगर में आया था, इसलिए अपने आपको असहज महसूस कर रहा था। कुछ योग्यता तो उसके पास थी, लेकिन कहां बैठना है और कैसे बात करनी है इस तरह की जानकारियों का अभाव था। वह अनजाने में चीफ इंजीनियर की कुर्सी पर ही बैठ गया। और इंतजार करने लगा। इसके मन में कुछ करने का, कुछ बनकर दिखाने का विचार था। हिम्मत और साहस की कोई कमी न थी। जो गुण एक नवयुवक में हाने चाहिए, वह सब उसके अंदर विद्यमान थे।

थोड़े अंतराल के बाद चीफ इंजीनियर ने कार्यालय में प्रवेश किया। उन्होंने आश्चर्य से देखा कि एक साधारण युवक उनकी सीट पर बेखौफ बैठा है और जो उनके आ जाने के बावजूद भी सामान्यतया बैठा ही रहा। साहब क्रोध में बोले-यह कौन पागल है? जो हमारी कुर्सी पर इस तरह से आराम कर रहा है। इसको इतना भी नहीं पता कि हमें कहां और कैसे बैठना चाहिए, कौन है यह? यह कहां से आया है? और इसे क्या काम है? वह युवक उठकर बोला-साहब! मैं गंगाराम हूं। साहब ने कहा-कौन गंगाराम कहां से आए हो? उसने नम्रतापूर्वक कहा-साहब! मैं गंगाराम लाहौर से नोकरी करने यहां आया हूं।

चीफ इंजीनियर ने आवेश में आकर कहा-तेरी यह मजाल कि तू मेरी कुर्सी पर बैठ गया, तुझे तो मेरे जूते साफ करने की भी नौकरी नहीं मिलेगी। यहां बैठने के लिए इंसान को मेहनत करनी पड़ती है, कोर्स करना पड़ता है और कई परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती हैं। तुम्हारी तरह के व्यक्ति इस कुर्सी के काबिल नहीं होते। इस अपमान की स्थिति में गंगाराम ने कई बार क्षमा मांगनी चाही, लेकिन उसे बोलने का अवसर नहीं दिया गया और वह केवल इन अहंकार वाले शब्दों को श्रवण करता रहा। इंजीनियर को इतना कुछ कहने बाद भा शांति नहीं आई उसने धक्का मारकर उसको कार्यालय से बाहर निकाल दिया।

गंगाराम शहर में नया था, गांव का रहने वाला था और उसे चपरासी के अलावा और कोई जानता भी नहीं था। लेकिन गंगाराम विचलित नहीं हुआ, उसने

- शेष पृष्ठ 7 पर

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

In Rajputana

Once Swami Dayanand went to Rajputana where he visited many Indian States. Everywhere he was well received and his lectures were heard by thousands of people. He delivered his message wherever he went, and became very successful with his results. The people realized the truth of what he said and promised to reform themselves and society.

But Swami Dayanand did not only spend his time in delivering speeches. He also wrote books in his leisure. Some of these books, such as the *Satyarath Prakash* and the *Sanskar Vidhi,* are read even to this day. But more important than these is his commentary on the Vedas. It is a thing of its own, and has been appreciated by scholars all over the world. It is this which gives Swami Dayanand his unique place amongst the great men of India.

Swami Dayanand had already done much for his country and its people. He had established many Arya Samajees which had many thousands of members. But he was not yet satisfied. It was his dream thatArya Samajees should be established at every place in India. It was also his desire that the Vedas should be studied by every body. He wanted no place to be without an Arya Samaj and no home to be without the Vedas.

It was to realize this dream that Swami Dayanand travelled everywhere. He was even

.....This is the Guru Dakhshina that I demand of you. The world knows nothing about the Vedas, which are a treasure-house of divine knowledge; you must go all over the country and preach their message to the people. You know that India is full of darkness and ignorance; you must show its people the light of knowledge. The Hindus do not worship the one, true God, but innumerable gods and goddesses. Tell them how wrong it is. Toady Indians follow a large number of religions; you should persuade them to follow the religion preached in the Vedas. Try to abolish all evil customs and teach people the blessings of Brahmcharya or celibacy. The Aryans are in a very miserable plight. Go forth and reform them.....

invited by the Maharaja to go to Jodhpur. This Maharaja was not the first one to send him an invitation. Many other rulers of States had already listened to him and become his disciples. Still some people tried to dissuade him from going to Jodhpur. They said, “The People of Jodhpur are very orthodox and ignorant. They may not like your criticism of their religion, and may even do harm to you." But these words had no effect on Swami Dayanand. “I must do my duty at all costs," he said. “I do not care for what happens to me. I do not even care very much for my life. I would, indeed, feel very happy ifllost my life in the service of my country. I must go, therefore, and give the people my message."

So Swami Dayanand went to Jodhpur, where many people heard his speeches. The Maharaja,

too, sent for him and listened to his words. This had a very good effect on him, and he began to reform his life. But he did riot do. so as quickly as Swami" Dayanand wished. Never theless SwarniDayanand exercised a great influence for good on him and had access to him at all times.

One day Swami Dayanand paid an unexpected visit to the palace. To his surprise and disappointment he saw there something which was much against his wishes. He found the Maharaja in undesirable company. But as soon as the Maharaja found he was there, he sent the people away.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 4 का शेष

स्वस्थ आंखों के लिए आवश्यक

नजर कमजोर के लिए नेत्र सर्जन के पास आता है और कहता है मुझे मोतिया तो नहीं है? नेत्र सर्जन के कहने पर कि तुम्हें सफेद मोतिया तो नहीं है आंख के परदे पर शुगर का असर है। मरीज क्या कहता है डॉक्टर साहब बहुत घबराहट हो रही थी, भगवान का धन्यवाद है कि मुझे मोतिया नहीं है। इसका अर्थ है आंख के परदे पर शुगर का असर, जिसका इलाज एवं बीमारी में रोकथाम करना इतना आसान नहीं है। तब भी इस बीमारी और आंखों की हर बड़ी बीमारी के सामने मोतिया का डर ज्यादा बना हुआ है।

आंख बनवाने शब्द का अर्थ– एक बुजुर्ग नेत्र सर्जन के पास आता है और कहता है कि मुझे कुछ दिखाई नहीं देता आंख बनवानी हैं, एक मरीज नेत्र सर्जन के पास आकर कहता है कि दिखाई नहीं देता डॉक्टर ने कहा कि आंख पर शुगर का असर होने के कारण आंख खराब हो गई, अब इलाज नहीं हो सकता है। हम आपके पास आए हैं अब आंख बना दीजिए। मरीज काला मोतिया या पलकों का ऑपरेशन कराने के बाद नेत्र सर्जन के पास आता है और कहता है मैंने आंखें बनवाई थी परंतु रोशनी नहीं आई।

बुजुर्ग एवं पड़ोसी का महत्व – अगस्त में एक मरीज आंख खराब लेकर नेत्र सर्जन के पास आता है पता चलता है काले मोतिया से आंख खराब हो गई। पूछने पर कि तुमने पहले ऑपरेशन क्यों नहीं कराया? मरीज का जवाब मिलता है कि आपने मई ऑपरेशन बताया था लेकिन पड़ोसी ने मना कर दिया कि गर्मी में ऑपरेशन मत कराना, पड़ोसी की सलाह ने अगस्त तक उसकी आंखें खराब कर दी। कुछ भेंगापन समय के साथ अपने आप ठीक हो जाते हैं तथा कुछ का ऑपरेशन 18 साल तक टाला जा सकता हैं लेकिन कुछ भेंगापन का इलाज 2 साल से पहले हो जाना चाहिए। इन बच्चों का इलाज अधिकतर बुजुर्ग एवं पड़ोसी की राय पर टाल दिया जाता है, जिन आंखों की रोशनी बाद में ऑपरेशन होने के बाद भी ठीक नहीं होती बुजुर्ग एवं पड़ोसी की राय से दर्द वाली आंख में मरीज दूध, गौमूत्र, मूंह का थूक आदि लगाकर आंख खराब कर लेते है।

अज्ञानता – आंख में लाली दर्द की तकलीफ तो सिर्फ आंख दुखने आने के लक्षण समझकर काला मोतिया या आंख में सूजन नजरअंदाज हो जाती है।एक मरीज चश्मे वाले के पास आकर कहते हैं कि मुझे कम दिखाई देता है चश्मा लगवाना है क्या कम दिखाई देने का कारण आपका नंबर ही होता है, आंख में लाली एवं दर्द में बहुत जल्दी आराम की इच्छा होने के कारण केमिस्ट से ड्रोप लेकर प्रयोग करने से आंखें दुखनी आने में, आंख में सफेदी पड़ जाती है एवं हमेशा के लिए नजर कमजोर हो जाती है।

संस्कृत वाक्य प्रबोध

स्त्रीश्वश्रुश्वशुरादिसेव्यसेवक एवं ननन्दश्भ्रातश्जायावादप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
406. न ह्यस्मिन् संसारेऽनुकूलस्त्रीपतिजन्य सदृशं सुखं किमपि विद्यते।	इस संसार के अनुकूल स्त्री और पुरुष से होनेवाले सुख के सदृश दूसरा सुख कोई नहीं है।
407. इदानीं वृद्धाऽवस्था प्राप्ता, यौवनं गतं, केशाः श्वेता जाताः, प्रतिदिनं बलं ह्रसति च।	इस समय वृद्धावस्था आई, जवानी गई, बाल सेफद हुए और नित्य बल घट रहा है।
408. स इदानीं गमनागमनमपि कर्तु मशक्तो जातः।	वह इस समय आने जाने में भी असमर्थ हो गया है।
409. बुद्धिविपर्यासत्वाद्विपरीतं भाषते।	बुद्धि विपरीत होने से उलटा बोलता है।
410. अद्याऽस्य मरणसमय आगत ऊर्ध्ववासत्वात्।	आज इसके मरने का समय आया, ऊपर को श्वास के चलने से।
411. सोऽद्य मृतः।	वह आज मर गया।
412. नीयतां श्मशानं वेदमन्त्रौर्घृता दिभिर्दह्यताम्।	ले चलो शमशान को, वेदमन्त्रों सहित घी आदि सुगन्ध्से दहन करो।
413. शरीरं भस्मीभूतं जातमतस्तृतीयेऽहनि सभस्मास्थिसंचयनं कृत्वा पुनस्तङ्निमित्तं शोकादिकं किंचिदपि नैव कार्यम्।	शरीर भस्म हो गया, आज से तीसरे दिन राखसहित हाड़ों को वेदी से अलग करके फिर उसके निमित्त शोकादि कुछ भी न करना चाहिये।
414. त्वं मातापित्रोः सेवां न करो यतः कृतघ्नी वर्त्तसेऽतो मातापितृसेवा केनापि कदापि नैव त्याज्या।	तू माता-पिता की सेवा नहीं करता इस कारण कृतघ्नी है, इसलिए माता-पिता की सेवा का त्याग किसी को कभी न करना चाहिये।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम – पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे – से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री
(9958174441)

पृष्ठ 5 का शेष

संकल्प है महान शक्ति

अपमान के कड़वे शब्दों को ही अपनी प्रेरणा का सबक बना लिया। गंगाराम विपरीत स्थिति में धैर्य धारण करते हुए दृढ़ संकल्प करते हैं-जो आज मेरा अपमान हुआ है, जिस कुर्सी से मुझे उठाया गया है और जिस कार्यालय से मुझे धक्का देकर बाहर निकाला गया है। मैं गंगाराम एक दिन अपनी योग्यता के आधार पर इसी सीट का हकदार बनूंगा। उसने ऐसा मन में निश्चय कर अपने लक्ष्य के प्रति सचेत होकर परिश्रम करना प्रारम्भ किया।

उस कम पढ़े-लिखे विद्यार्थी ने पुन: अथक परिश्रम किया। उसके परिणाम स्वरूप वह युनिवर्सिटी में टॉपर हो गया। उसने हार नहीं मानी दिन-रात लगन के साथ पढ़ाई करता रहा। इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करके जब इंजीनियर बनने के लिए अप्लाई किया तो ब्रिटिश सरकार ने उसको इंजीनियर पद के लिए नियुक्त किया। सबसे विचित्र बात यह रही कि जिस चीफ इंजीनियर ने उसको अपमानित किया था उसको रिटायरमैन्ट भी उसी दिन का था। गंगाराम को उसी कार्यालय में कार्य के लिए भेजा गया। जिस समय दोनों इंजीनियर परस्पर मिले तो गंगाराम ने पूछा, आप मुझे जानते हैं, मैं कौन हूं? मैं वही गंगाराम हूं। जिसको आपने धक्का देकर कार्यालय से बाहर निकाला था।

उस समय तो मैंने आपको कोई जवाब नहीं दिया था लेकिन आज देता हूं, यह वही कुर्सी है जिसके अहंकार में आकर आपने मेरा तिरस्कार किया था। आज मैं इसी कुर्सी का हकदार बनकर आया हूं।

कालांतर में उस व्यक्ति ने इतना परिश्रम किया, इतनी मेहनत से कार्य किया कि ब्रिटिश सरकार के लोग भी उसको सर गंगाराम! कहकर पुकारने लगे। और यहीं पर उसकी महानता समाप्त नहीं होती, उसने दिल्ली में सर गंगाराम हॉस्पीटल बनवाया। जिसने आज उस व्यक्ति का चारों दिशाओं में यश फैल रहा है। दिल्ली के अस्पतालों में सर गंगाराम अस्पताल का अपना अलग स्थान है। वह व्यक्ति संसार में अमर हो गया। आज भी लाखों लोग उसका नाम सम्मान के साथ लेते हैं। दिल्ली में राजेन्द्र नगर इलाके में यह अस्पताल स्थित है। इसीलिए अपने जीवन में संकल्प शक्ति को अपनाओ और सफलता को प्राप्त करो।

प्रेरक प्रसंग

एक अभूतपूर्व घटना

गतांक से आगे -

जब सत्पन्थी लोगों को पता चला तो शिवगुण भाई के ग्राम के व इतर गुजराती बन्धुओं ने इसका बड़ा प्रबल बहिष्कार किया। नारायण भाई को शिवगुण भाई ने पाँच रुपया दान दिया था। इसके कारण भी विपदा आई। खेतसी भाई ने कराची में ही सैयद मुराद अली पेराणावाले को पाँच रुपया दान दिया, उसे तो पाप न माना गया। अपनी बिरादरी के युवकों के सुधार के लिए दिया गया दान चूँकि एक वेदाभिमानी नारायणजी भाई पटेल को दिया गया इसलिए सत्पन्थी कलमा पढ़नेवाले, निकाह करवानेवाले पटेलों ने शिवगुण भाई या उनकी पत्नी का कराची में जीना दूभर कर दिया।

शिवगुण भाई काची छोड़ने पर विवश हुए। यह करुण कहानी बहुत लम्बी है। इसी कहानी की अगली कड़ी हम यहाँ देना चाहते हैं। शिवगुण भाई अपने ग्राम लुडवा आये। कुछ समय बाद उनका सत्पन्थी गुरु खेतसी भाई भी कराची से लुडवा पहुँचा। एक दिन शिवगुण भाई से पूछा कि तुम अब किस मत में हो? खीजकर शिवगुण भाई ने कहा-'किसी भी मत में जाऊँ तुम्हें क्या?'

खेतसी भाई ने बड़े प्रेम से कहा-'वेदधर्म ग्रहण करके आर्य बन जाओ।' शिवगुण भाई बोले-''बस कर बाबा, पहले सत्पन्थी बनाया, अब आर्य और वेदधर्मी बनाने लगा है।''

खेतसी के पास पैसा था। शिवगुणजी से मित्रता थी। शिवगुणजी ने विपत्ति का सामना करते हुए अपनी पत्नी तथा पुत्र को तो ग्राम में छोड़ा। खेतसी भाई से तीन सौ रुपया ऋण लेकर पूर्वी अफ्रीका जाने का निश्चय किया। ग्राम से बम्बई पहुँचे। पारपत्र बनवाया, टिकट लिया। उसी जहाज में नैरोबी चल पड़े। शिवगुण भाई ने पूछा, 'आप कैसे जा रहे हो?' उसने कहा, घूमने-फिरने चलेंगे। अफ्रीका जाकर खेतसी भाई शिवगुणजी को छोड़कर कहीं निकल गये। खेतसी की न जान, न पहचान, न भाषा-ज्ञान, चल पड़े और अगले दिन शिवगुण भाई से कहा चलो कहीं चलें। शिवगुण भाई को समाज मन्दिर ले-गये। पहले दिन वे आर्यसमाज मन्दिर का ही पता करने गये थे। उन्हें पता था कि नैरोबी में आर्यसमाज है। खेतसी कराची रहते हुए सुशीला भवन समाज मन्दिर के सदस्य बन गये थे। शिवगुण भाई समाज मन्दिर के कार्यक्रम को देखकर पहले तो कुछ सन्देह में पड़े फिर जब वहाँ कन्याओं के भजन सुने और महात्मा बद्रीनाथजी, संस्थापक नैरोबी समाज और संस्थापक गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर के भजन सुने तो मुग्ध हो गये।

शिवगुण भाई के मन से मुसलमानी भाव तो निकल चुके थे। आर्यसन्तान होने का अभिमान नारायण भाई के कराची में जगा दिया था। उन दिनों अफ्रीका के नैरोबी नगर में पंजाब से एक वानप्रस्थी गये थे। निरन्तर एक मास उनकी कथा सुनकर आपके मन में वैदिक धर्म के प्रति दृढ़ आस्था पैदा हो गई। *-क्रमश:*

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

शोक समाचार

आचार्य डॉ. देव शर्मा जी को मातृशोक

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान, लेखक आचार्य डॉ. देव शर्मा जी जी पूज्या माताजी श्रीमती विमला देवी जी का दिनांक 6 सितम्बर, 2021 को लगभग 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। इससे पूर्व दिनांक 23 मई, 2021 को उनके पूज्य पिता श्री पं. हरपाल शास्त्री जी का भी निधन हो गया था। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री अमर सिंह पौनिया जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज कोसी कलां, जिला मथुरा (उ.प्र.) के प्रधान श्री अमर सिंह पौनिया जी की धर्मपत्नी एवं महिला आर्यसमाज कोसी कलां की मन्त्री श्रीमती शीला पौनिया जी का दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को ब्रेन हैमरेज के कारण मात्र 48 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 सितम्बर, 2021 को सम्पन्न हुई।

श्री शिवा शास्त्री जी को भ्रातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक प्रकल्प के सम्वर्धक श्री शिवा शास्त्री जी के फुफेरे भाई श्री आनन्द जी का दिनांक 20 सितम्बर, 2021 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आचार्य अंकित शास्त्री जी को भ्रातृशोक

आर्यसमाज वसन्त कुंज के धर्माचार्य आचार्य अंकित शास्त्री जी के छोटे भाई श्री प्रवेश कुमार जी का दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को दिल्ली में बिजली का करंट लगने से मात्र 30 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन उनके पैतृक गांव अजानपुर, जिला एटा (उ.प्र.) में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 सितम्बर, 2021 को उनके पैतृक गांव में ही सम्पन्न हुई।

श्री शम्भूप्रसाद आर्य जी का निधन

आर्यसमाज चोपन, सोनभद्र (उ.प्र.) के प्रधान श्री शम्भू प्रसाद आर्य जी का दिनांक 18 सितम्बर, 2021 की रात्रि 12 बजे निधन हो गया। वे लम्बे समय से किडनी रोग से पीड़ित चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री रमेश चन्द्र टांक जी को पुत्र शोक

आर्यसमाज बढ़ापुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.) के संरक्षक एवं पूर्व मन्त्री श्री रमेश चन्द्र टांक जी के छोटे सुपुत्र श्री विनोद टांक जी का दिनांक 19 सितम्बर, 2021 को दोपहर 3 बजे लम्बी बीमारी के चलते निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री रोशनलाल शर्मा जी को मातृशोक

आर्यसमाज सासनीगेट, अलीगढ़ के पूर्व मन्त्री श्री रोशनलाल शर्मा जी की पूज्यमाता जी श्रीमती चन्द्रवती शर्मा जी का दिनांक 7 सितम्बर, 2021 का निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 17 सितम्बर, 2021 सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक साहित्य विक्रेताओं के लिए विशेष सूचना

ऐसे समस्त महानुभाव जो आर्यसमाज के विभिन्न कार्यक्रमों/वार्षिकोत्सवों में जा-जाकर साहित्य विक्रय का कार्य करते हैं तथा आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य साहित्य नहीं बेचते। अर्थात् जिनकी आजीविका कवेल आर्यसमाज के साहित्य को विभिन्न स्थानों पर होने वाले आयोजनों में जाकर बेचने पर ही निर्भर है, उनके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास कर रही है।

अत: ऐसे समस्त वैदिक साहित्य विक्रेताओं से निवेदन है कि वे योजना का लाभ उठाने के लिए अपना पंजीकरण कराएं। पंजीकरण कराने के लिए एक प्लेन कागज पर आवेदन पत्र के साथ अपना नाम, पता, मोबाईल नं. तथा इस कार्य में आने वाली समस्याओं और उन्हें दूर करने के उपाय/सुझाव लिखकर **"महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001"** के पते पर लिखकर भेजें। *- महामन्त्री*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 सितम्बर, 2021 से रविवार 26 सितम्बर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 23-24/09/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 सितम्बर, 2021

सिविल सेवा प्रतियोगी कृपया ध्यान दें!

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा की तैयारियों के लिए आर्य समाज की एक पहल

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

सुशीलराज आर्य प्रतिभा केन्द्र, हरि नगर, नई दिल्ली

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो सिविल सर्विसिज परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं किन्तु आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा की तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के प्रशिक्षण की घोषणा की गई है। संस्थान द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को दिल्ली में छात्रावास, कोचिंग, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन सहित सभी सुविधायें नि:शुल्क प्रदान की जायेंगी। इस नि:शुल्क सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक उम्मीदवार www.pratibhavikas.org ऑनलाइन आवेदन करें। **ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि 20/10/2021** है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-9311721172, Email : dss.pratibha@gmail.com

ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि 20/10/2021

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 2 का शेष

गरीबी। यानि समाज के एक बड़े तबके तक धर्म ही नहीं पहुंचा उसे ना अपने ग्रन्थ का पता ना धर्म का ज्ञान इसी का फायदा ये लोग फर्जी मन्त्र बनाकर उठा रहे हैं।

उन्हें बताते हैं कि जीसस आने वाले हैं और सबके दु:ख समाप्त हो जायेंगे। अगर तुम किसी अन्य धर्म का पालन करोगे तो नरक में जाओगे। मसलन दिखावटीपन और नकली चमत्कार अशिक्षित गरीब लोगों को समझाने के लिए काफी है। दूसरे तबके को यूरोपीय देशों या कनाडा को वीजा देने का वादा करते हैं। बताया जाता है कि मिशनरियों का दावा है कि ईसाई बनने से उनके सफल वीजा की राह आसान हो जाएगी।

कारण आज बड़े बड़े चर्च पंजाब के अन्दर खड़े किये जा रहे हैं। लोगों की आस्था चावल और दाल के भाव खरीदी जा रही है। चंगाई सभा सज रही है यहाँ तक अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी की तर्ज पर ये लोग शिरोमणि चर्च प्रबंधक कमेटी का गठन तक कर रहे हैं। ऐसे में किसी चरनजीत का मुख्यमंत्री बनाया जाना को आसान राजनीति नहीं, बल्कि ईसाई वोट बेंक में सेंध लगाने का एक बड़ा खेल हो सकता है। क्योंकि धर्म जब तक निजी अनुभव तक सीमित रहे धर्म रहता है। लेकिन जब धर्म के नाम के सहारे साम्राज्य खड़ा किया जाने लगे, जबदस्ती या बहला फुसलाकर झुण्ड तैयार किये जाने लगे। तब वह धर्म न होकर संस्थागत रूप धारण कर लेता है। या कहो राजनितिक रूप धारण कर लेता है। तब राजनेता जो राजनीति के बिजनेस में है वो आसानी से इसे स्वीकार कर लेते हैं और कथित धार्मिक स्थल धर्मांतरण के अड्डे बन जाते हैं।

– *सम्पादक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह